27

FFLG7B

छत्तीसगढ़ का सपूत

गीता और मोहन रायपुर में अपने चाचा के घर शादी में आए हैं। आज वे चाचा के लड़के रमेश के साथ रायपुर का बाज़ार घूमने गए। एक चौक पर उन्होंने काफी भीड़ देखी। मोहन भीड़ के थोड़ा पास जाकर जानने का प्रयास करने लगा कि वहाँ क्या हो रहा है। भीड़ में लोग फूल मालाएँ एवं फूल का चक्र लिए हुए किसी महापुरुष की जय–जयकार कर रहे थे। वहीं खड़े एक व्यक्ति ने बताया कि आज 10 दिसंबर है। छत्तीसगढ़ के महान सपूत वीर नारायण सिंह का बलिदान दिवस।

लगभग 150 वर्ष पहले वीर नारायण सिंह को फाँसी दी गई थी। हर वर्ष यहाँ महान शहीद को याद कर श्रद्धाँजलि दी जाती है।

लोगों ने फूल–मालाएँ एवं फूल चक्र चढ़ाए। इस मौके पर एक व्यक्ति ने छत्तीसगढ़ी में जोशीला गीत गाया, जो इस प्रकार है–

छत्तीसगढ़ के हल्दीघाटी, माटी सोना खान के।

भारत के बनगे हे तीरथ, माटी सोना खान के।।

अनियाव दमन से लड़िस इहाँ, नारायण छाती तान के।

अंग्रेजन से लोहा लेइस, डहर चलिस बलिदान के।।

कथा लहू से लिखिस सुराजी, अऊ स्वदेश अभिमान के।

हँसत–हँसत फाँसी म चढ़गे, प्रिय होगे भगवान के।।

वो शहीद के जन्मभूमि ये माटी सोना खान के ।

शहीद वीर नारायण सिंह

इस गीत को अपनी कक्षा में सामूहिक रूप से गाओ। यदि ऐसा कोई और गीत तुम्हें याद है तो अपनी कक्षा में गाकर सुनाओ।

vc bu i'uk d mRrj nkA

ohj ukjk;.k flg dgk d jgu oky Fk

---

mUgksu fdl ls ykgk fy;k

dfork e vkbl ckrk dk viu 'kCnk e fy[kkA

वीर नारायण सिंह के पिता का नाम राम राय था। वे सोना खान के जमींदार थे। सोना खान महानदी के किनारे बसी एक रियासत थी। राम राय निर्भीक, दयालु व परोपकारी थे तथा अपनी प्रजा में लोकप्रिय थे, जिससे कुछ जमींदार नाखुश थे।

वीर नारायण सिंह का जन्म आज से लगभग 200 साल पहले हुआ था। पिता की मृत्यु के बाद इन्होंने रियासत की जिम्मेदारी संभाली।

वे अपने पिता की तरह निर्भीक, दयालु एवं न्यायप्रिय थे। अपनी प्रजा में लोकप्रिय थे। अन्य ज़मींदारों को यह बात चुभती थी। उस समय भारत में अँग्रेजों का राज था। सभी देशी रियासतों के राजाओं और जमींदारों को कुछ रकम कर के रूप में उन्हें देनी पड़ती थी। जमींदार ये रकम किसानों से वसूलते थे।

छत्तीसगढ़ में भी अँग्रेजों के अत्याचार बढ़ रहे थे।

एक बार सोना खान में अकाल पड़ा। लोग भूख से मरने लगे। नारायण सिंह ने अपनी जनता के लिए भरसक प्रयास किए। और तो और व्यापारियों से अनाज उधार माँग कर लोगों में बाँटा। ऐसे में एक व्यापारी के यहाँ वे अनाज माँगने गए। जब व्यापारी ने अनाज नहीं दिया तो वे आग बबूला हो गए और अपनी प्रजा के लिए उन्होंने व्यापारी के गोदाम का ताला तुड़वाकर अनाज लोगों में बाँट दिया।

0;kikjh u vukt nu l euk D;k fd;k gkxk

d{kk e ppk djk fd vdky d le; D;k gkrk g

rkyk VVu ij 0;kikjh u D;k fd;k gkxk

व्यापारी ने इस बात की शिकायत अँग्रेज अफसर से कर दी। अँग्रेजों ने नारायण सिंह पर डकैती का आरोप लगाकर जेल में डाल दिया।

कुछ समय बाद वे अपनी जनता व सैनिकों की मदद से जेल से भाग गए। सोना खान पहुँचकर उन्होंने अँग्रेजों से लड़ने के लिए एक सेना बनाई।

इधर अँग्रेजों ने सेना की एक टुकड़ी सोनाखान के लिए रवाना की।

घोड़े पर सवार शहीद वीर नारायण सिंह

अँग्रेजों को सोनाखान के बारे में ज़्यादा पता तो था नहीं। परन्तु कुछ गद्दार लोगों की मदद से वे सोनाखान पहुँच गए।

सोनाखान में भयंकर युद्ध हुआ। नारायण सिंह बड़ी वीरता से लड़े। एक बार अँग्रेज हारने भी लगे परन्तु कुछ लोगों ने अँग्रेजों की मदद की और नारायण सिंह को रणभूमि छोड़नी पड़ी।

यदि गद्दार लोगों ने अँग्रेजों की मदद न की होती तो क्या होता?

नारायण सिंह को बंदी बना लिया गया तथा उन पर मुकदमा चलाया गया। उन्हें फाँसी की सजा सुनाई गई।

छत्तीसगढ़ के महान सपूत को 10 दिसंबर 1857 को रायपुर में आज से करीब 150 साल पहले फाँसी की सजा दी गई। नारायण सिंह की याद में हर वर्ष 10 दिसंबर को उन्हें श्रद्धांजलि दी जाती है।

geus D;k lh[kk \

ekf[kd i'u

1. वीर नारायण सिंह का बलिदान दिवस कब मनाया जाता है?
2. वीर नारायण सिंह ने किससे लोहा लिया?
3. सोनाखान छत्तीसगढ़ के किस जिले में है?

fyf[kr i'u

1. वीर नारायण सिंह ने अपनी जनता के लिए क्या प्रयास किए?
2. वीर नारायण सिंह को फाँसी की सजा क्यों दी गई?
3. अंग्रेजों ने वीर नारायण सिंह को जेल में क्यों डाल दिया?

[kkstk vkl&ikl

1. छत्तीसगढ़ के और भी वीर सपूतों की जानकारी प्राप्त कर उनके द्वारा किए गए कार्यों को लिखो।
2. अखबार तथा पत्र–पत्रिकाओं में छपे महापुरुषों के चित्र एकत्र करो और अपनी कॉपी में चिपकाओ।